बी.एच.डी.सी.–103/आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता

बी.ए. (सी.बी.सी.एस.)

सत्रीय कार्य
(जनवरी–2025 तथा जुलाई–2025 सत्र के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी.–103
आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी.–103

प्रिय छात्र/छात्राओ!

'आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता' पाठ्यक्रम में आपको एक सत्रीय कार्य करना है। यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (टी.एम.ए.) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किये गये हैं। उद्देश्य : सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। उद्देश्य यह भी है कि अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा और समझा है उसे आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरभं करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. ऐच्छिक पाठ्यक्रम के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए विस्तृत निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।
2. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
3. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के प्रथम पृष्ठ के मध्य भाग में पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख कीजिए।
4. उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

   अनुक्रमांक : ....

   नाम : ....

   पता : ....

   ....

   पाठ्यक्रम का नाम/कोड : ....

   सत्रीय कार्य कोड : ....

   अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : ....

   दिनांक : ....

5. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज़ का इस्तेमाल करें और उन कागज़ों को अच्छी तरह से बाँध लें।
6. प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।
7. सत्रीय कार्य पूरा करके जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास निर्धारित तिथि तक अवश्य जमा करा दें।

<u>सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि</u>

जनवरी 2025 सत्र के लिए : 30 अप्रैल, 2025

जुलाई 2025 सत्र के लिए : 31 अक्टूबर, 2025

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

सत्रीय कार्य में आपसे मुख्य रूप से तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं।
उत्तर देने के लिए आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगा :

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में सभी खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।
2. **अभ्यास** : अपने उत्तर का प्रारूप लिखने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार का विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्त्तर तार्किक और सुसंगत हो,
ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,
ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा जो आपकी अभिव्यक्ति, शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो।
घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और
ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

1. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसको साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप ज़ोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दीजिए।
2. **विशेष** : अपने उत्तर की फ़ोटो प्रति/कार्बन प्रति अपने पास अवश्य रखें।

शुभकामनाओं सहित!

नोट :	याद रखें कि विश्वविद्यालय के नए नियमानुसार परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता
सत्रीय कार्य
(खंड 1 से 4 पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी.–103
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.डी.सी.–103/बी.ए.एच.डी.एच./2025
कुल अंक : 100

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। दस अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग आठ सौ शब्दों में तथा पाँच अंकों के प्रश्नों के उत्तर लगभग चार सौ शब्दों में दीजिए।

भाग–1

1. निम्नलिखित पद्याशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए: 10X4=40

(क) सुधामुखि के बिहि निरमलि बाला।
अपरुब रूप मनोभवमंगल
त्रिभुवन विजयी माला।।
सुन्दर बदन चारु अरु लोचन
काजर–रंजित भेला।
कनक–कमल माझे काल भुजंगिनि
श्रीयुत खंजन खेला।।
नाभि बिबर सएं लोम–लतावलि
भुजगि निसास–पियासा
नासा खगपति–चंचु भरम–मय
कुच–गिरि–संधि निवासा।।

(ख) संतो भाई आई ग्यांन की आंधी रे।
भ्रम की टाटी सभै उड़ांनी माया रहै न बांधी रे।।
दुचिते की दोइ थूंनि गिरांनीं मोह बलेंडा टूटा।
त्रिसना छांनि परी घर ऊपरि दुरमति भांडा फूटा।।
आंधी पाछैं जो जल बरसै तिहिं तेरा जन भींना।
कहै कबीर मनि भया प्रगासा उदै भानु जब चींना।।

(ग) ऊधौ तुम हौ चतुर सुजान।
हमकौं तुम सोई सिख दीजौ, नंद सुवन की आन।।
आमिश है भोजन हित जाकौ, सो क्यों सागहिं मान।
ता मुख सेम पात क्यौं परसत, जा मुख खाए पान।।
किंगरी स्वर कैसैं सचु मानत, सुनि मुरली की तान।
सुख तौ ता दिन होइ सूर ब्रज, जा दिन आवै कान्ह।।

(घ) एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय।।
कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, तो ही साँचे मीत।।
छिमा बड़न को चाहिए, छोटेन को उतपात।
का रहिमन हरि को घट्यो, जो भृगु मारी लात।।

भाग–2

2. जायसी की भक्ति में प्रेम के महत्त्व की विवेचना कीजिए। 10

3. कबीर की सामाजिक चेतना के प्रमुख पक्षों का उल्लेख कीजिए। 10

4. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : 5X2=10
   (क) सूरदास की भक्ति भावना
   (ख) तुलसी का रामराज्य

भाग–3

5. घनानंद की श्रृंगार भावना की विशिष्टताओं का सोदाहरण उल्लेख कीजिए। 10

6. रहीम की रचनात्मक विशिष्टताओं का उल्लेख कीजिए। 10

7. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : 5X2=10
   (क) मीरा का काव्य सौंदर्य
   (ख) विद्यापति का काव्य सौंदर्य